om-11 INITIAL_Page 1 and 2 12-08-2014 11:59 Page 11

फरूखाबाद। गंगा जागरण अभियान का स्वागत करते हुए ब्र.कु.मंजु। साथ हैं गुरु वचन सिंह ग्रंथी साहब, सूफी संत पप्पन मिया, ब्र.कु. रीता तथा अन्य।

जमशेदपुर। 'सर्वधर्म सद्भावना सम्मेलन' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. रामनाथ,माउण्ट आबू, पारसी फायर टेम्पल के पेसी वाडिया, गायत्री परिवार के श्री प्रभाकर जी, पंजाबी आर्य समाज के पूरन जी तथा समाजसेवी लक्ष्मी निधि।

दिल्ली-डेरावल नगर। 'नव चेतना बाल व्यक्तित्व विकास' शिविर के समापन अवसर पर समूह चित्र में ब्र.कु. लता, प्रिन्सीपल श्रीमती प्रभा बजाज,राजकीय उच्च विद्यालय, डॉ. ऊषा किरण तथा बच्चे।

दिल्ली-मजलिस पार्क। 'नारी सुरक्षा हमारी सुरक्षा' कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए द्वारका विद्या भारती सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल की प्रिन्सीपल श्रीमती ममता गुप्ता। साथ हैं निगम पार्षद नीलम बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. राजकुमारी, बैंक मैनेजर श्रीमती पूनम मल्होत्रा, डायरेक्टर अजीत शर्मा, वकील अहमद अली,रिपोर्टर।

दिल्ली-पीतमपुरा। 'नव चेतना बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए स्कूल डायरेक्टर सुरेश जी, प्रॉपर्टी डीलर मुकेश जी, ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. अनीता तथा ब्र.कु. कनिका।

नवी मुम्बई-वाशी। बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के समापन के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. रमन राठोड़, इंदिरा गांधी इंजीनियरिंग कॉलेज के मैनेजिंग ट्रस्टी सुनील जाधव, ब्र.कु. शीला, गुरमीत कौर मोंगा, शशीधर मरार, राजीव सिंह, ब्र.कु. मीरा तथा बच्चे।

आध्यात्मिक प्रज्ञा.....

-ब्र.कु.जगदीशचंद्र हसीजा

आध्यात्मिक प्रज्ञा हमारी बुद्धि की वह स्थिति, गुणवत्ता अथवा क्षमता है जिससे कि हम झट से किसी बात को ठीक से समझ लेते हैं, व्यक्ति को भांप लेते हैं, परिस्थिति का अवलोकन कर सकते हैं और होने वाले परिणामों की झलक पा सकते हैं। यह हमारे अभ्यासों तथा शुभ प्रयत्नों का वह फल है जो विकसित होकर हमें यह योग्यता प्रदान करता है कि हमारी मनोस्थिति एकरस बनी रहे और हम निन्दा-स्तुति, घृणा-द्वेष, हानि-लाभ, जय-पराजय और विघ्नों-तूफानों में रहते हुए भी एक निर्विघ्न तथा अचल स्थिति में रह सकें, ठीक निर्णय कर सकें, परिस्थिति का विश्लेषण कर सकें, मूल्यांकन कर सकें और आत्म-विश्वास से अपने इरादों का क्रियान्वयन कर सकें तथा अनेक प्रकार के प्रलोभन, उत्तेजनायें, उकसाहटें सामने आने पर भी हम अपनी नैतिकता में दृढ़ बने रहें। यह बुद्धि की प्रफुल्लित अवस्था है जिसमें दैवी गुणों का विकास हुआ होता है और मनुष्य भय, चिन्ता तथा दूसरों के दबावों में भी निर्द्वन्द्व होकर कार्यरत रहता है। ऐसी बुद्धि वाले व्यक्ति को नकारात्मक विचार नहीं आते और वह किसी का बुरा नहीं सोचता। वह कोरे स्वार्थ से ऊपर उठकर रहता है और भलाई के पथ पर मजबूत कदम से आगे बढ़ता है।

आध्यात्मिक ग्रंथों में आध्यात्मिक प्रज्ञावान मनुष्य की उपमा हंस से की गई है। जैसे हंस मोती चुगता है और कंकड़-पत्थर छोड़ देता है, वैसे ही दिव्य प्रज्ञा वाला व्यक्ति शुभ मनोरथों, भावों और विचारों ही को ले लेता है और व्यर्थ से सदा बचकर रहता है। उसका उत्साह अदम्य होता है। उसकी उपमा कछुए से भी की गई है। जैसे कछुआ अपना काम करने के बाद अपनी इन्द्रियां समेट लेता है और अचल होकर पड़ा रहता है, वैसे ही रूहानियत की बुद्धि वाला व्यक्ति भी कर्म करने के बाद अपने विचारों और कर्मोंको समेट लेता है और अपने मन की गुफा में मग्न होकर प्रभु-प्रेम में विलीन होकर, आत्मरस के स्वाद में विभोर होकर आनंदित होता रहता है। उसका मन ही मानसरोवर होता है। उसका विचार ही गंगाजल होता है और वह उसमें डुबकियां लगाते हुए पावन-पुनीत बनकर समाधिस्थ हो जाता है। ''ॐ नम: शिवाय, ॐ नम: शिवाय''-इस मंत्र का आलाप करने की उसे आवश्यकता नहीं होती; वह इसके अर्थस्वरूप में स्थित होता है। वह उस परमात्मा रूपी साजन की सजनी बन अथवा उस मालिक का सेवक या बालक बन या उस पिता का पुत्र बन, शिक्षक का शिष्य बन या सखाभाव से द्रवित होकर उस अनुपम सखा का सखा बन गोया सर्व सम्बन्धों से उसी का होकर उसी के संग-संग होता है। वह इस संसार में रहते भी इससे उपराम अथवा न्यारा होता है। परमात्मा रूपी शमा पर वह पतंगे की तरह विचार-चक्र लगाता है। जैसे चकोर चाँद को देखकर बेतहाशा से ऊपर उसकी ओर उड़ जाता है, वैसे ही उसका चित्त रूपी चकोर उड़कर प्रभु की ओर जाता है।

इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के संस्थापक ने यह भी कहा है कि रूहानी बुद्धि वाले व्यक्ति के मन में कोई लौकिक कामना व इच्छा नहीं होती। वह जनहित के लिए, सबकी सेवा के लिए, प्रभु के प्रति समर्पित बुद्धि होता है। अन्यश्च, वह ट्रस्टी भाव से ही कार्यरत रहता है। वह कर्मयोगी होता है अर्थात् उसके हाथ कर्म में प्रवृत्त होने पर भी उसकी बुद्धि योगयुक्त होती है। वह राजा जनक के समान विदेही अवस्था में बना रहता है और कुशलता पूर्वक कर्म करता है। उसके जीवन में खुशी, उत्साह, सेवाभाव सदा बने रहते हैं। दूसरों के दु:ख दूर करने के लिए और स्वयं पूर्णता तक पहुँचने के लिए उसका जीवन सादा और स्वभाव में दया, करुणा तथा वृत्ति में त्याग होता है।

मनुष्य की यह स्थिति तब होती है जब वह इस स्मृति में स्थित होने का अभ्यास करता है कि मैं एक आत्मा हूं, एक प्रकाश-कण हूं, ज्योति-बिन्दु हूं, अनादि हूं, अनश्वर हूं, शान्त हूं, अपनी आदिम अवस्था में शुद्ध हूं, परमपिता परमात्मा की अमर सन्तति हूं और इस संसार रूपी कर्मक्षेत्र पर दूर देश, जिसे 'परलोक' अथवा 'ब्रह्मलोक' कहते हैं, से इस विश्व नाटक में अपना पार्ट बजाने आया हूं। मुझे यहाँ कार्य करना है और फिर वापिस लौट जाना है...। इस प्रकार राजयोग के अभ्यास से मनुष्य की बुद्धि कुशाग्र, एकाग्र, सांकुश, अनुशासित, दिव्य, विशाल एवं प्रफुल्लित होती है। दैवी सम्पदा वाली यह बुद्धि ही रूहानियत वाली बुद्धि है। हम शुद्ध आहार, व्यवहार, विहार, आचार और राजयोग का अभ्यास करते हुए इस मेधा, बुद्धि अथवा प्रज्ञा को प्राप्त करते हैं जो सब प्रकार के भेद-भावों से और कलह-क्लेषों तथा संघर्षों से ऊंची उठी होती है।

चूंकि व्यक्तिगत एवं विश्व की सभी समस्याएं हमारी बुद्धि के नैतिकता-रहित, मन के अंकुश-रहित, भावावेगों के मर्यादा-रहित हो जाने के कारण से हैं, इसलिए आज ऐसी बुद्धि अथवा प्रज्ञा की ज़रूरत है। ऐसी बुद्धि होने पर अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, विज्ञान तथा तकनीकी, कलाओं तथा संरचनाओं, साहित्य तथा शिक्षा, प्रशासन तथा व्यवस्था, न्याय तथा विधि-विधान सभी को एक नयी दिशा मिलती है। इनमें नया उत्कर्ष होता है।

हरिद्वार। रक्षाबंधन पर्व पर हरिद्वार में संत संगोष्ठि का आयोजन किया गया। संगोष्ठि में पवित्रता के मूल्य और उनके द्वारा ही भारत का उत्थान होगा ये सभी एक स्वर से निष्कर्ष बिन्दु पर पहुँचे। ब्र.कु. प्रेमलता ने भारत को विश्वगुरु के रूप में ले जाने के लिए पवित्रता के मूल्य का होना अति आवश्यक बताया। बिना पवित्रता भारत को स्वर्णिम बनाया नहीं जा सकता। अपने व्यवहार व सम्बन्ध में पवित्रता एवं शुद्धता को अपनाकर ही हम सुख-शांति की कामना कर सकते हैं। आए हुए सभी संतों ने भी अपने अपने विचार रखे। इसके बाद सभी संत जनों को ब्र.कु. प्रेमलता ने राखी बांधी। तत्पश्चात् सभी को ईश्वरीय सौगात देकर कार्यक्रम की समाप्ति की गई।

ब्र.कु. प्रेमलता महामण्डलेश्वर दर्शनसिंह को राखी बांधते हुए ।